रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर

राष्ट्रीय एकात्मता के लिए सर्वश्रेष्ठ है हिन्दी –कुलपति प्रो. मिश्र

हिन्दी एवं भाषा विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय अंतरराष्ट्रीय वेबिनार का समापन

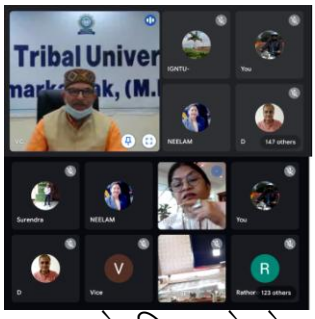

जबलपुर 14 सितम्बर। राष्ट्रीय एकात्मता के लिए पूरे देश में एक समान लिपि होने की बात आचार्य बिनोवा भावे से लेकर महात्मा गांधी तक कई महानुभवों ने कही है। एक समान लिपि होगी तो उससे बहुत सुविधा भी होगी। राष्ट्रीय एकात्मता का अर्थ ये है कि हमारे अन्दर भाषा के आधार पर भी राष्ट्रीय आत्मगौरव का भाव उत्पन्न हो। हिन्दी और देवनागरी दोनों यह भाव उत्पन्न करने में समर्थ और सशक्त हैं। हिन्दी भारत को एक बड़े परिवार के रूप में देखती है, जहां कई अन्य भाषाएं हैं। लेकिन भाषायी विभिन्नता के बावजूद, हिन्दी सर्वश्रेष्ठ है। सभी लोगों को हिन्दी स्वीकार्य भी है। उपरोक्त उद्‌गार माननीय कुलपति प्रो. कपिल देव मिश्र ने मंगलवार को त्रिदिवसीय अंतरराष्ट्रीय वेबिनार समापन कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए व्यक्त किये।

रानी दुर्गावती वि.वि. के हिन्दी एवं भाषा विज्ञान विभाग द्वारा 'हिन्दी–वर्तमान और भविष्य' विषय पर आयोजित त्रिदिवसीय अंतरराष्ट्रीय वेबिनार के द्वितीय दिवस विषय प्रर्वतन करते हुए संयोजक एवं विभागाध्यक्ष प्रो. धीरेन्द्र पाठक ने कहा कि संचार क्रांति और विज्ञापन संस्कृति का हिन्दी के प्रचार–प्रसार में खासा योगदान है। वैश्वीकरण के कारण जो बाजार आज बन रहा है उसके विकास–विस्तार में संचार क्रांति और विज्ञापन उद्योग की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। देश के हर नागरीक को आज यह महसूस करने कि आवश्यकता है कि हम चाहे कितनी भी भाषाएं सीखें परंतु हमें हिन्दी पढना लिखना और बोलना अवश्य आना चाहिए।

लोक कल्याण, संस्कार की भाषा है हिन्दी –

अंतरराष्ट्रीय वेबिनार में मुख्य अतिथि माननीय प्रो. श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी, कुलपति इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय अमरकंटक ने कहा कि नई शिक्षा नीति युवाओं की आशा–आकांक्षाओं और भविष्य को ध्यान में रखते हुए तैयार किया गया है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में हिन्दी को महत्वपूर्ण भूमिका के तौर पर शामिल किया गया है। कई देशों में हिन्दी को पाठ्यक्रम में जोडने की मुहिम चल रही है। हमारे देश की बोल–चाल की प्रमुख भाषा

हिंदी ही है। विदेशी या दूसरी भाषाओं का ज्ञान होना गलत नही है अपितु वैश्विक स्तर पर हमारी ज्ञान–पिपासा में वृद्धि ही होती है किंतु अपनी भाषा की उपेक्षा निंदनीय है। हिन्दी लोककल्याण और हमारी संस्कृति की भाषा है।

हिन्दी को जीवन की भाषा बनाना चाहिए–

वेबिनार में मुख्य वक्ता के रूप में हिन्दी यूनिवर्सिटी फाउंडेशन नीदरलैण्ड की निदेशक डॉ. पुष्पिता अवस्थी ने अपने संबोधन में कहा कि विगत 15–20 वर्षों से विदेशों के हिंदी का प्रसार तेजी से हुवा है। फिर भी राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी के लिए अभी बहुत कुछ किया जाना शेष है। हिंदी को राष्ट्रीय भाषा के समुचित व व्यवहारिक स्थान पर प्रतिष्ठित करना तथा हिंदी को कम्प्यूटर एवं जीविकोपार्जन की भाषा बनाना आदि। हिंदी प्रेमियों को हिंदी की स्वीकार्यता एवं उपयोगिता बढ़ाने के साथ साथ अन्य भारतीय भाषाओं की अभिवृद्धि के लिये भी सतत प्रयास करते रहना चाहिए। हिन्दी को जीवन की भाषा बनाना चाहिए। यह प्रयास ही देश की संस्कृति का अवलंब एवं संवाहक होगा।

हिन्दी सभी चुनौतियों को पूर्ण करने में सक्षम–

वेबिनार में विशिष्ट वक्ता के रूप में प्रो. मनोज कुमार पांडे, अध्यक्ष् हिन्दी विभाग रातुम नागपुर विवि, नागपुर महाराष्ट्र ने कहा कि यदि हम वर्तमान में हर स्थिति को ध्यानार्थ रख कर सोचें तो कुछ समाधान हमारे सामने दृष्टिगोचर होते हैं, हिन्दी यदि रोजगार कि भाषा बन जाए तो इस विषय में चिंता करने कि जरूरत ही नहीं पड़ेगी। यदि हिन्दी भाषा में शिक्षण प्राप्त युवा को अन्य युवाओं के समान आय के अवसर प्राप्त हो जाएं और भारतीय सामूहिक जगत भारत के दिल की धड़कन हिन्दी भाषा कि महत्ता समझे तो हिन्दी भाषा को भारत में जन–जन कि भाषा का सम्मान दिलाना सम्भव है।

हिन्दी की दुर्दशा सुधारने के लिए समाधान जरूरी –

वेबिनार में विशिष्ट वक्ता के रूप में प्रो. लक्ष्मी पाण्डेय, डॉ. हरिसिंह गौर विवि सागर मप्र ने कहा कि हिंदी की दुर्दशा के लिए शिक्षा पद्धति और शासन व्यवस्था दोनों जिम्मेदार है। अगर देश पर हावी अंग्रेजियत को हटाना है तो शिक्षा पद्धति में आमूलचूल परिवर्तन लाना होगा स्कूल स्तर की शिक्षा में भारतीय भाषाओं का प्रयोग अनिवार्य करना होगा। हिंदी के प्रचार–प्रसार में कमी न रखी जाए। विभिन्न आयोग–परीक्षा या साक्षात्कार होते हैं उन्हें हिंदी भाषा में अनिवार्य कर दिया जाए। चाहे कितनी भी चुनौती आये हिंदी भाषा उनका सामना करती रही है और स्वयं को उभारती रही है। अंग्रेजी पर आत्म निर्भरता कम करके भी हिंदी का विकास किया जा सकता है।

अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन लाए–

विशिष्ट वक्ता के रूप में डॉ. मोना कौशिक, भारत विद्या विभाग सोफिया यूनिवर्सिटी, बुल्गारिया ने कहा कि आज हिंदी की वैश्विक स्थिति काफी बहेतर है विश्व के प्रायरू सभी महत्वपूर्ण देशों के विश्व विद्यालयों में हिंदी अध्ययन अध्यापन हो रहा है। आज अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी का उपयोग हो रहा है। इसके प्रसार–प्रचार के लिए सभी को मिलकर कार्य करना चाहिए। अंतरराष्ट्रीय वेबिनार का संचालन हिन्दी एवं भाषा विज्ञान विभाग की डॉ. नीलम दुबे ने किया। स्वागत भाषण डॉ. श्रीमती राशि चतुर्वेदी एवं आभार प्रदर्शन डॉ. विपुला सिह ने किया। इस अवसर पर हिंदी विभाग की डॉ. आशा रानी सहित अन्य विद्वतजन मौजूद रहे।

विश्वविद्यालय प्रवेश हेतु हेल्प डेस्क क्रियाशील, 20 सितम्बर तक जारी है प्रवेश प्रक्रिया

रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय के सभी शिक्षण विभागों में प्रवेश के लिये प्रवेश प्रक्रिया 20 सितम्बर, 2021 तक जारी रहेगी। विश्वविद्यालय में प्रवेश को लेकर पहुंचने वाले विद्यार्थियों के लिए विवि प्रशासन की ओर से हेल्प डेस्क भी निरंतर क्रियाशील है। माननीय कुलपति प्रो. कपिल देव मिश्र के मार्गदर्शन एवं कुलसचिव प्रो. बृजेश सिंह के निर्देशन में मुख्य प्रशासनिक भवन में क्रियाशील हेल्प डेस्क में प्रवेश संबंधि विद्यार्थियों की सभी समस्याओं का हल एक ही जगह प्रदान किया जा रहा है। ऐसे में अब छात्रों को अलग–अलग विभागों के चक्कर नहीं लगाने पड़ेंगे।

विवि के विधि, फार्मेसी सहित अन्य विभागों जिनमें प्रवेश पंजीयन निर्घारित सीटों से कई गुना अधिक प्राप्त होने पर उनकी ऑनलाईन पंजीयन प्रक्रिया को बंद कर शेष विभाग जहां सीटें रिक्त हैं उनमें वर्तमान में प्रवेश प्रक्रिया जारी है। ऑनलाईन प्रवेश पोर्टल विद्यार्थी आगामी 20 सितम्बर 2021 तक अपना ऑनलाईन पंजियन कराकर प्रवेश सुनिश्चित कर सकते हैं। उपकुलसचिव डॉ. दीपेश मिश्र की ओर से बताया गया कि विवि की ओर से प्रवेशार्थियों की सुविधा को ध्यान में रखकर हेल्प डेस्क की शुरुआत की गई है। उन्होंने बताया कि छात्र अक्सर दाखिला, दस्तावेजों के सत्यापन आदि के बारे में जानकारी के लिए परेशान रहते हैं। इस हेल्प डेस्क के माध्यम से हर छोटी से छोटी जानकारी भी उन्हें आसानी से उपलब्ध करायी जा रही है। माननीय कुलपति प्रो. मिश्र ने हेल्प डेस्क से जुड़े अधिकारियों को सभी जानकारियां सही समय पर छात्रों को देने का निर्देश दिया, ताकि कोई दिक्कत न हो।

पूछताछ, जानकारी के साथ सुरक्षा के प्रति कर रहे जागरूक –

विश्वविद्यालय के छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. विवेक मिश्र ने बताया कि हेल्प डेस्क इन्फॉर्मेशन सेंटर व कस्टमर केयर सेंटर की तरह काम कर रही है। अब सभी सूचनाएं व समस्याओं के लिए हेल्प डेस्क द्वारा छात्रों को जानकारी दी जा रही है। छात्र सुबह 10 से शाम 5 बजे तक पूछताछ कर सकेंगे। विवि के एडमीशन प्रॉसेस को ऑनलाइन ही रखा गया है ताकि कोविड–19 से स्टूडेंट्स की सुरक्षा की जा सके। विवि की ये भी योजना है कि प्रवेश के लिये वे तरीके अपनायें जायें, जिनकी सहायता से अधिकतम स्टूडेंट्स को लाभ मिल सके। किन्हीं कारणों से विवि पहुंचे प्रवेशार्थियों के लिए हेल्प डेस्क के माध्यम से जानकारी प्रदान करने के साथ विश्वविद्यालय द्वारा स्टॉफ एवं आंगतुकों को सोशल डिस्टेंसिंग सहित कोविड गाईड

लाईन का पालन करते हुए स्वास्थ्य एवं कोविड–19 संबंधी समस्याओं के विषय में जागरूक भी किया जा रहा है।